Que - कृषि उत्पादकता से आपका क्या आशय है। भारत में निम्न कृषि उत्पादकता निम्न होने के कारणों की व्याख्या करें।

Ans → कृषि उत्पादकता का आकलन दो प्रकार से किया जाता है :-

1. प्रति हैक्टेयर उत्पादकता या भूमि की उत्पादकता
2. प्रति श्रमिक उत्पादकता

'भूमि की उत्पादकता' का अर्थ प्रति हैक्टेयर उत्पादन की मात्रा से है, जबकि 'प्रति श्रमिक उत्पादकता' का अर्थ प्रति श्रमिक उपज के मूल्य से होता है। इसके अन्तर्गत एक खेत के कुल उत्पादन की कीमत को उसमें कार्य करने वाले श्रमिकों की संख्या से भाग देकर प्रति श्रमिक उत्पादकता प्राप्त की जाती है।

भारत में कृषि की उत्पादकता का विश्लेषण प्रति हैक्टेयर उत्पादन की मात्रा तथा प्रति श्रमिक उपज की कीमत दोनों दृष्टियों से की जाती है।

भारतीय कृषि की कम उत्पादकता के कारण
(CAUSES OF LOW PRODUCTIVITY OF INDIAN AGRICULTURE)

(I) प्राकृतिक कारण (Natural Causes)

1. वर्षा की अनिश्चितता :- भारतीय कृषि प्रकृति पर निर्भर है जिसमें विशेष रूप से वर्षा पर, परन्तु वर्षा निश्चित नहीं है। कभी न्यून और कभी अधिक होती है। इसी कारण भारतीय कृषि को मानसून का जुआ कहा जाता है।

2. भूमि - क्षरण :- शताब्दियों से निरन्तर प्रयोग में आने के कारण भारतीय कृषि - भूमि का ह्रास हो गया है। निरन्तर क्षरण से उर्वरा - शक्ति का ह्रास हुआ है तथा भारतीय भूमि की उत्पादकता बहुत कम हो गयी है।

3. प्राकृतिक प्रकोप :- शीत ऋतु में कई बार शीत लहर हमारी फसलों को हानि पहुँचा देती है। इसके अतिरिक्त बाढ़, आंधी तथा कीड़े मकोड़े, टिड्डी आदि भी कृषि को नुकसान पहुँचाते हैं। इन सभी बाधाओं का कृषि की उत्पादकता एवं विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

(II) तकनीकी कारण (Technological Causes)

1. उत्पादन की पुरानी तकनीक :- आज भी अधिकांश किसान उत्पादन की पुरानी तकनीक - लकड़ी के हल व खुरपी को काम में ला रहे हैं, जबकि

बाजार में आधुनिक इस्पात के हल, ट्रैक्टर, थ्रेसिंग मशीन, पानी के लिए डीजल पम्प आदि उपलब्ध हैं।

(2) उत्तम बीज का अभाव :- भारतीय किसान फसलों की बुवाई के समय अच्छे बीज की ओर विशेष ध्यान नहीं देता है। प्रायः वह अच्छा-बुरा सब प्रकार का बीज बो देता है। दूसरे, अच्छे बीज भी उपलब्ध नहीं होते। वह प्रायः महाजन से बीज खरीदता है जो उसकी मूल्य अधिक लेकर भी खराब बीज देता है। तीसरे, भारत में अच्छे बीजों का अभाव है और किसान को उसका ज्ञान भी नहीं है। इस कारण प्रति हेक्टेयर उत्पादकता का स्तर निम्न रहता है।

(3.) अपर्याप्त सिंचाई सुविधाएँ :- दुर्भाग्य है कि देश में आज भी सिंचाई के साधनों का घोर अभाव बना हुआ है। सिंचाई के साधनों के अभाव में आधुनिक ढंग से कृषि कार्य करना अत्यधिक कठिन होता है। परिणामस्वरूप भारतीय कृषि की दशा सुधक नहीं सकी है।

(4.) फसलों की असुरक्षा :- भारत में निम्न उत्पादकता का एक कारण फसलों की कीड़े-मकोड़ों व रोगों से सुरक्षा न कर पाना भी है।

(5.) खाद की कमी :- खेती की उत्पादकता बढ़ाने के लिए खाद का बहुत अधिक महत्व है परन्तु भारत के किसान उचित मात्रा में खाद का उपयोग नहीं करते हैं।

(III) संस्थागत कारण (Institutional Causes)

(1.) भूमि का उप-विभाजन एवं अपखण्डन :- भारत में उत्तराधिकारी नियमों के कारण भूमि का बँटवारा होता रहता है। इससे खेतों का आकार बहुत छोटा हो गया है। ये छोटे-छोटे खेत एक स्थान पर न होकर अनेक स्थानों पर बिखरे हुए हैं। इस कारण आधुनिक यंत्रों द्वारा उन्नत कृषि नहीं की जा सकती है।

(IV) आर्थिक कारण (Economic Causes)

~~(1.) भूमि का~~

(1.) भारतीय कृषकों की ऋणग्रस्तता :- भारतीय कृषक ऋण के बोझ से दबे हुए हैं। महाजनों की शोषण नीति के कारण "भारतीय कृषक ऋण में जन्म लेता है, ऋण में जीवन व्यतीत करता है और ऋण में ही प्राण त्याग देता है।" अतः भारतीय कृषकों के सामने वित्तीय कठिनाइयाँ हैं

और वे भूमि सुधार आदि में पर्याप्त पूँजी लगाने में असमर्थ हैं। इसके कारण भी हमारी कृषि की उपज कम है।

(2.) **पूँजी का अभाव** :- बचत कम होने पर कृषक, कृषि क्षेत्र में उत्तम साधनों का प्रयोग करने में असमर्थ रहता है। इसी कारण भारतीय कृषि की उत्पादकता कम है तथा पिछड़ी हुई अवस्था में बनी हुई है।

(3.) **दोषपूर्ण कृषि बाजार व्यवस्था** :- भारत में कृषि वस्तुओं के क्रय विक्रय के लिए सुसंगठित और सुव्यवस्थित बाजार का अभाव रहा है। अतः वे अपनी कृषि-उत्पादित वस्तुओं की बिक्री उचित मूल्य पर नहीं कर पाते।

(4.) **साख सुविधाओं का अभाव** :- ग्रामीण क्षेत्रों में साख-सुविधाओं का आज भी अभाव बना हुआ है। गाँव का साहूकार ऊँची ब्याज दर तो वसूल करता ही है किन्तु साथ ही कृषकों के साथ धोखाधड़ी भी करता है। एक बार जो कृषक साहूकार के चंगुल में फँस जाता है उसका बाहर निकलना कठिन हो जाता है।

(5.) **बढ़ती हुई कृषि उत्पादन लागत** :- उत्पादन लागत अधिक होने से बचतों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। बचत कम होने पर कृषि क्षेत्र में विनियोग नहीं हो पाता तथा विनियोग के अभाव में कृषि अविकसित हो जाती है।

The End

By Dept. of Commerce, R.N. College, Pandaul.

By Dr. S.K. Sharma